मेहनतकशों का पैग़ाम मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

पाक्षिक

Email : mazdoormorcha@yahoo.co.in
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06 /R.N.I. No. 66400/97

विधायक कौशिक की मुख्यमंत्री रैली
रैली का रैला: प्रशासन ने ठेला — 3

बलात्कार के पीछे कामुकता नहीं, पुरुष वर्चस्व
पूर्व जज स्वतंत्र कुमार बने यौन आरोपी — 4

एनजीओ यानी गैर सरकारी संगठनों का भ्रष्टाचार
उच्च शिक्षा से हाथ खींचती सरकार — 6

अस्पताल चलाने की नीयत ही नहीं ईएसआईसी
अब भी जुल्म का नमूना.... — 8

वर्ष 27 अंक 1 फरीदाबाद, शनिवार, 16-30 नवंबर 2013 फोन : - 9999595632 ₹ 2

कार्पोरेट स्कैम पर कैग चुप रहा और मोदी भी

अफ़सरों–नेताओं की लूट प्रकाश में आई अंधेरे में रही जनता की असली लुटाई

दिल्ली मज़दूर मोर्चा ब्यूरो

कैग विनोद राय के जमाने में 2 जी घोटाले के रूप में एक लाख छिहत्तर हज़ार करोड़ की राष्ट्रीय खजाने को हानि का मामला सामने आने के बाद सैंकड़ों-हज़ारों करोड़ के कितने ही घोटालों की बाढ आ गई है। एक ओर उच्चतम न्यायालय के दबाव में सी बी आई धड़ाघड़ मुकदमें दर्ज कर रही है, और दूसरी ओर चुनाव का मौसम आने से राजनीतिक दलों में एक-दूसरे पर भ्रष्टाचार के आरोपों की झड़ी लगाने की होड़ देखी जा सकती है।

पर असली स्कैम वे नहीं हैं जिन्हें कैग की रपटों, सीबीआई के मुकदमों और 'राष्ट्रीय' मीडिया की सुर्खियों में दिखाया जा रहा है। और न वह है जो नरेन्द्र मोदी जैसे भावी प्रधान मन्त्रियों या अरविंद केजरीवाल जैसे ईमानदार राजनीतिकों के भाषणों में दिखाया जाता है। दरअसल, असली स्कैम उजागर करने में शायद ही किसी की दिलचस्पी बनती है क्योंकि सम्बन्धित सभी पक्षों-अफ़सर, रातनीतिज्ञ, मीडिया-को प्रत्यक्ष/ परोक्ष चुप्पी की मलाई मिलती रही है।

आइये एक-एक कर इन असली घोटालों में से तीन पर नज़र डालें।

घोटाला नम्बर 1: भारत संचार निगम लिमिटेड (बी एस एन एल) और महानगर टेलिफ़ोन निगम लिमिटेड (एम टी एन एल) के पास पूरे देश में पहला लैंडलाइन का विशालतम नेटवर्क है। सभी जानते हें कि इनका मोबाइल फ़ोन का कारोबार तमाम अन्य बड़ी प्राइवेट कम्पनियों से बहुत पीछे है। यह भी सभी जानते हैं कि मोबाइल फ़ोन का कारोबार पूरी तरह

मुकेश अंबानी अनिल अंबानी रतन टाटा कुमार मंगलम बिड़ला नवीन जिंदल

क्योंकि खानों का आवंटन मनमाने ढंग से करने के लिये जनहित का तर्क जरुरी है, लिहाज़ा सम्बन्धित महाकार्पोरेट स्टील प्लांट या ताप बिजलीघर को बनाने की परियोजना का सहारा लेता है। सम्बन्धित सरकारें इन परियोजनाओं को विकास एवं रोज़गार के नाम पर आनन-फ़ानन में स्वीकृति दे देती हैं। अब शुरु होता है असली खेल। परियोजनाओं की आड़ में खनिज की लूट।

लैंडलाइन के नेटवर्क पर निर्भर करता है; क्योंकि बिना इस नेटवर्क के मोबाइल फ़ोन की पहुंच दूर दराज तक हो ही नहीं सकती। यहां तक कि महानगरों में भी तमाम मोबाइल कम्पनियां उपभोक्ताओं तक पहुंचने के लिये एम टी एन एल के लैंडलाइन नेटवर्क पर ही निर्भर हैं।

सवाल यह है कि उपरोक्त समीकरण के चलते तो बी एस एन एल और एम टी एन एल की अपनी मोबाइल सेवा शीर्ष पर होनी चाहिये थी न कि सबसे फ़िसड्डी। ऐसा भी नहीं है कि बी एस एन एल/एम टी एन एल के स्टाफ़ की गुणवत्ता या कौशल में कोई कमी है। असल में तो इस क्षेत्र की सबसे अनुभवी कम्पनी होने के नाते इनका स्टाफ़ तकनीकी रूप से सर्वश्रेष्ठ हैं। यहीं से घोटाले की जड़, टहनियों व पत्तियों समेत नज़र आने लगेगी।

घोटाला यह है कि पिछले लगभग दस वर्षों में बी एस एन एल/एम टी एन एल का आधुनिकीकरण ठप्प कर दिया गया है। मोबाइल सेवा के विस्तार एवं उसकी गुणवत्ता के लिये जो तकनीकी निवेश करना चाहिये और जैसी मशीनरी लगानी चाहिये, वैसा जानबूझ कर रोका हुआ है। फ़ाइलों में इस दिशा में योजनायें बनाई जाती हैं, तकनीकी एवं वित्तीय मूल्यांकन की कवायदें भी होती हैं, बड़े-बड़े टेंडर निकाले जाते हैं पर इसके आगे कुछ नहीं हो पाता। दरअसल प्राइवेट कम्पनियों को यही रास आता है। यदि ऐसा न हो तो वे अर्श से फ़र्श पर दिनों-दिन में आ जायेंगी।

इस घोटाले का मूल्य उतना ही है जितना कि इन तमाम कम्पनियों का मुनाफ़ा और सम्पदा का योग। यह सैंकड़ों-हज़ारों करोड़ के एकमुश्त घोटालों से इस मामले में अलग है कि इसमें रोज़ाना सैंकड़ों करोड़ का नुकसान राष्ट्रीय खजाने को वर्षों से हो रहा है। यह नुकसान आगे भी इसी तरह चलता रहेगा। एक और भिन्नता यह है कि घोटाले का शोर नहीं मचता और सारी धोखाधड़ी फ़ाइलों पर, कानूनी तरीकों से की जा रही है। आधुनिकीकरण को रोकने में बी एस एन एल/एमटी एन एल के कर्णधार पूरी तरह शामिल रहते हैं, यह कोई रहस्य नहीं।

शेष पेज 2 पर

'मज़दूर मोर्चा' 27वें वर्ष में ....

इस अंक से 'मज़दूर मोर्चा' 26 वर्ष पूरे कर 27 वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। इस दौरान जुझारू तेवरों के इस पाक्षिक अखबार ने तरह-तरह के उतार-चढाव देखे हैं। बीच में इसे दैनिक करने का प्रयोग भी कुछ वर्षों के लिये किया गया। आज यह फ़रीदाबाद का अग्रणी स्थानीय अखबार है।

इस लम्बे सफ़र के दौरान उत्पीड़ितों के हक में और व्यवस्थाजन्य शोषण के खिलाफ़ यह अखबार जम कर खड़ा रहा है। कई बार सत्तानशीनों और नौकरशाहों द्वारा अखबार की आवाज को दबाने के प्रयास किये गये, जिनमें सम्पादक सतीश कुमार पर जानलेवा हमले से लेकर झूठे संगीन मुकदमें बनाने की लम्बी फ़हरिस्त भी शामिल है।

फ़रीदाबाद के लोगों के दिलों में घर कर चुके इस अखबार की आज अपनी विशेष साख है। न केवल निर्भीक पत्रकारिता के क्षेत्र में 'मज़दूर मोर्चा' का नाम लिया जाता है बल्कि इसकी बेबाक सच्चाई पर भी पाठकों का भरोसा हमेशा कायम रहा है। इस अवसर पर हम एक बार पुन: नये जोश से अपनी लेखनी की धार को तेज रखने के लिये कटिबद्ध हैं।

क्या पाश सिद्ध होगा लौहपाश

क्या रियल एस्टेट के धंधों में लगे नेताओं की लालच करनाल के पाश पुस्तकालय को लील पायेगी ? पंजाबी के क्रान्तिकारी कवि अवतार सिंह पाश के नाम पर शहीद पुलिसकर्मियों की समृति में बनाया गया पाश पुस्तकालय इस सवाल के जवाब की प्रतीक्षा में है। मीडिया और बुद्धिजीवियों के साथ-साथ पंजाबी भवनाओं के भुखर विरोध के बावजूद हरियाणा सरकार ने इस मुद्दे पर चुप्पी साध रखी है।

पाश की ख्याति अन्तर्राष्ट्रीय होने के चलते, विशेषकर अमेरिका, कनेडा, ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया से पुस्तकालय को गिराने के विरोध में अनेकों संदेश आते जा रहे हैं। पंजाब एवं हरियाणा के पंजाबी समुदाय में आम रोष देखा जा सकता है। लोगों की समझ में यह नहीं आ पा रहा कि कैसे कोई जनप्रतिनिधि होने का दावा करने वाली सरकार एक सांस्कृति धरोहर को गिराने का निर्णय ले सकती है।

विशेषकर लोग करनाल की स्थानीय विधायक सुमिता सिंह से खार खये हुए हैं। इस विधायक पर आरोप है कि उसने ही पुस्तकालय को गिराने का दबाव बनाया है ताकि उसकी आस-पास की सम्पत्ति का बाज़ार भाव आसमान छू सके।

श्रद्धांजलि

इस पखवाड़े हिन्दी साहित्य ने अपने दो वरिष्ठ कर्मियों को खो दिया। विजयदान देथा का निधन उनके अपने गांव में राजस्थान में हुआ। वे लोकसाहित्य की आधुनिक संदर्भों में पुनर्रचना के सबसे बड़े नाम थे। वरिष्ठ आलोचक एवं कवि परमानंद श्रीवास्तव का निधन पूर्वी उत्तर प्रदेश के गोरखपुर ज़िले में हुआ। अपने लम्बे सक्रिय रचनाकाल में वे मुख्यत: नये रचनाकारों की कृतियों पर वस्तुपरक समीक्षा लेखन के लिये जाने जाते थे। दोनों महानुभव पिछले कुछ समय से गंभीर रूप से अस्वस्थ रहे। 'मज़दूर मोर्चा' परिवार दोनों की स्मृति को नमन करता है।

ख़बर दार

ब्रैडमैन से ब्रांडमैन तक सचिन... सचिन...

क्रिकेट के महानतम बल्लेबाज़ डॉन ब्रैडमैन ने अपनी तुलनालायक केवल एक मात्र भारत के सचिन तेंदुलकर को पाया था। यह तब की बात है जब तेंदुलकर अपने क्रिकेट कैरियर के बीच में चमक रहे थे। तब से, आज खेल से सन्यास लेने की बेला तक, न सचिन के बल्ले की धूम कम हुई है और न उनकी ख्याति । क्रिकेट में बल्लेबाज़ी का शायद ही कोई ऐसा कीर्तिमान होगा जो सचिन के नाम से जुड़ा नहीं है।

सचिन को खेलते हुए देखना हर क्रिकेट प्रेमी को रोमांच से भरता आया है। ब्रैडमैन की तरह ही उनके पास खेल का हर स्ट्रोक होता था और साथ ही उसे खेल

खेलता सचिन

ब्रैडमैन सचिन

पाने का सम्पूर्ण कौशल भी। समय और चलन के हिसाब से वे अपनी बल्लेबाज़ी के हुनर को लगातार परिवर्तित कर सके और साथ ही निखारते भी गये। उन्हें बल्लेबाज़ी करते देखने का मतलब था क्रिकेट को उसकी सम्पूर्णता में देखना।

24 वर्ष के सचिन के कैरियर में

बेचता सचिन

ब्रांडमैन सचिन

क्रिकेट ने कई उतार-चढाव देखे। खेल में पैसे की बाढ तो आई ही, सट्टेबाज़ी का भी खूब बोलबाला रहा। भारत में हर खेल में राजनीति घुसी हुई है। , फ़िर भला सर्वाधिक पैसे वाला खेल इससे अछूता कैसे रह पाता।

शेष पेज 2 पर

रैली का रेला: प्रशासन ने ठेला

दस नवम्बर को गोहाना में मुख्यमंत्री हुड्डा की रैली की विशाल उपस्थिति को देखते हुए इसे रैला कहना ही उचित होगा। निश्चय ही मोदी की रिवाड़ी रैली और चौटालों की कुरूक्षेत्र रैली से कहीं बड़ा ताम-झाम गोहाना रैली में रहा। 9 साल से हुड्डा परिवार सारी मलाई खा रहा था; रैली में सरकारी कर्मचारियों व आम जनता को भी कुछ रेवड़ियां बांटी गयीं। सारे प्रदेश का प्रशासन हफ़्तों से इस रैली की सफ़लता में जुटा हुआ था। रैली स्थल पर घंटों पहले से सादी वर्दी वाले पुलिसकर्मियों ने आगे के बाड़े भर रखे थे। सांसद विधायक, पार्टी नेतागण के अलावा हज़ारों दल्ले दलालों के जिम्मे लोगों को लाने का गुरुतर कार्य था। आजकल का प्रति व्यक्ति रेट 500-1000 रुपया और एक अद्धा।

(विस्तृत विवरण पेज 8 पर)